भारतीय ज्ञान परम्परा

सम्पादक

प्रो• अजय कुमार दुबे
डीन शिक्षा संकाय
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर

डा.नीरज कुमार शुक्ल
विभागाध्यक्ष बी.एड.
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
काशीपुर ऊधम सिंह नगर

डॉ वन्दना द्विवेदी
सह आचार्य संस्कृत
नवयुगकन्या महाविद्यालय राजेन्द्र नगर
लखनऊ उत्तर प्रदेश

Kalindi Prakashan

कालिंदी प्रकाशन आजमगढ़ उत्तर प्रदेश

भारतीय ज्ञान परम्परा

ISBN : 978-81-986666-8-0

© प्रो॰ अजय कुमार दुबे
© डा० नीरज कुमार शुक्ल
© डॉ वन्दना द्विवेदी

मूल्य : 130

प्रथम संस्करण: 2025

प्रकाशक :
कालिंदी प्रकाशन
ऐरा बुजुर्ग आजमगढ़ उत्तर प्रदेश
Mobile No: +91 9140270320, +91 945390139
kalindiprakashan@gmailcom

प्राक्कथन

भारतीय सभ्यता का मूलाधार सदैव से ज्ञान एवं संस्कृति रहा है। प्राचीन काल से ही भारत ने सत्य की खोज, आत्मा और ब्रह्म के रहस्यों का अन्वेषण, मानवता के कल्याण तथा जीवन के उच्च आदर्शों की स्थापना में विश्व का मार्गदर्शन किया है। इसी कारण भारत को विश्वगुरु की संज्ञा प्राप्त हुई।

भारतीय ज्ञान परंपरा न केवल आध्यात्मिक और दार्शनिक चिंतन का परिचायक है, बल्कि यह गणित, विज्ञान, चिकित्सा, खगोल, साहित्य, कला और सामाजिक व्यवस्था के विविध पक्षों को भी समाहित करती है। वेद, उपनिषद, स्मृति, पुराण, आचार्यकृत ग्रंथ एवं लोक परंपराएँ इस धरोहर के सशक्त स्रोत हैं। इस परंपरा की विशिष्टता यह है कि यह केवल बौद्धिक जिज्ञासा तक सीमित न रहकर व्यावहारिक जीवन से भी गहराई से जुड़ी रही है।

इस पुस्तक का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न आयामों का सुव्यवस्थित एवं अकादमिक परिचय प्रस्तुत करना है। इसमें प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था, दार्शनिक दृष्टिकोण, वैज्ञानिक उपलब्धियाँ, साहित्य एवं कला की परंपराएँ तथा समाज में उनके योगदान का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, यह भी स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि भारतीय ज्ञान परंपरा आधुनिक युग की चुनौतियोंकृजैसे शिक्षा में गुणवत्ता, पर्यावरण संतुलन, नैतिक मूल्यों की स्थापना एवं वैश्विक शांतिकृके समाधान में भी उतनी ही प्रासंगिक है।

यह पुस्तक विद्यार्थियों, शोधार्थियों, अध्यापकों एवं भारतीय संस्कृति में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगा। मुझे आशा है कि यह न केवल ज्ञान–विस्तार में सहायक होगा, बल्कि पाठकों में अपनी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति सम्मान और आत्मगौरव की भावना भी उत्पन्न करेगा।

अंत में, मैं उन सभी विद्वानों एवं सहयोगियों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके मार्गदर्शन और सहयोग से इस पुस्तक का प्रकाशन संभव हो सका।

प्रो॰ अजय कुमार दुबे
डा० नीरज कुमार शुक्ल
डॉ वन्दना द्विवेदी

विषय–सूची

- **भारतीय शिक्षा में परंपरागत ज्ञान का समावेश (एनईपी 2020)**
  प्रोफेसर अजय कुमार दुबे 01
- **अथर्ववेदीय चिंतन एवं पर्यावरणीय संदर्भ**
  डॉ वन्दना द्विवेदी 07
- **भारतीय ज्ञान परम्परा : दर्शन,अध्यात्म और समाज के विशेष संदर्भ में**
  डॉ० कृपाशंकर पाण्डेय 15
- **भारतीय ज्ञान परंपरा में मूल्य शिक्षा**
  डॉ पूनम पाण्डेय 22
- **भारतीय ज्ञान परंपरा– शैक्षिक परिदृश्य पुर्नगठन**
  डा. नीरज कुमार शुक्ल 28
- **हिंदी साहित्य और भारतीय ज्ञान परम्परा**
  कु. अमिता मिश्रा 33
- **भारतीय ज्ञान प्रणाली**
  डॉ0 साधना त्रिपाठी 42
- **ग्राम्य विकास की व्यापक पहल**
  प्रो. एन.एल.मिश्र 46
- **भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा व्यवस्था**
  पवन वर्मा, शोध छात्रा 52
- **भारतीय ज्ञान परम्परा और हिन्दी साहित्य**
  चन्द्रपाल सिंह 61
- **भारतीय ज्ञान परंपरा और सामाजिक मूल्य**
  डॉ0 मुनीष कुमार पाण्डेय 67
- **भारतीय राजनीतिक विचार: "कौटिल्य का अर्थशास्त्र" का योगदान**
  प्रशांत त्रिवेदी 73
- **बौद्ध साहित्य में व्यावसायिक शिक्षा**
  डॉ0 अरविन्द कुमार सिंह & डॉ0 अंजना सिंह 82
- **भारतीय ज्ञान परम्परा, आवश्यकता, अर्थ एवं महत्व**
  डॉ0 संजीव कुमार चतुर्वेदी 90
- **वैदिक साहित्य में भारतीय ज्ञान परम्परा**
  डॉ0 ज्योति पाण्डेय 93
- **भारतीय ज्ञान परम्परा एवं सामाजिक मूल्य**
  डॉ0 कु0 पूजा देवी 100
- **गार्गी–याज्ञवल्क्य संवाद : भारतीय ज्ञान परम्परा और महिला सशक्तीकरण का विमर्श**
  डॉ. संजय शर्मा 105
- **नालंदा का पुस्तकालय भारतीय ज्ञान का संरक्षक और पुस्तकालय विज्ञान की प्रेरणा**
  नीरज कुमार सिंह 111
- **वैदिक साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा**
  रत्न कुमार पांडे 115
- **सभ्यता, समाज एवं भारतीय ज्ञान परंपरा एक अध्ययन एवं विश्लेषण**
  डॉ प्रज्ञा त्रिवेदी 123
- **भारतीय ज्ञान प्रणाली में सेवा का महत्व**
  डॉ उमेश शुक्ल 131
- **प्राचीन भारतीय परम्परा में गुरू–शिष्य की अवधारणा**
  सुमन लता, शोध छात्रा 135
- **मनुष्य के स्वास्थ्य पर भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रभाव**
  प्रोफेसर ऋचा शुक्ला 143
- **भारतीय ज्ञान मीमांसा: प्राचीन विश्वविद्यालयीय शिक्षा प्रणाली**
  डॉ अनुराधा कुमारी 151
- **भारतीय ज्ञान परम्परा और अनुसन्धान**
  डा. जुगेंद्र सिंह 159
- **भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली में राष्ट्रीय ज्ञान आयोग की भूमिका**
  डॉ. रजनी शर्मा 166
- **भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020**
  डॉ अखिलेश सिंह 171
- **शिक्षा के राजनीतिक स्वर एक भारतीय परिप्रेक्ष्य**
  डॉ महेश मेवाफरोश 175
- **प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली में स्वामी रामदेव का शैक्षिक दर्शन**
  डॉ अविनाश चंद्र मिश्र 182

गार्गी–याज्ञवल्क्य संवाद : भारतीय ज्ञान परम्परा और महिला सशक्तीकरण का विमर्श

डॉ. संजय शर्मा
विभागाध्यक्ष–राजनीति विज्ञान विभाग,सहकारी पोस्टग्रेजुएट कॉलेज, मिहरावां, जौनपुर

सारांश

गार्गी–याज्ञवल्क्य संवाद भारतीय वेदान्तिक परंपरा का महत्त्वपूर्ण एवं विचारणीय भाग है, जो महिलाओं की बौद्धिक भूमिका को उजागर करता है। इस संवाद में गार्गी की याज्ञवल्क्य के साथ गहरी तर्कशक्ति और ज्ञान के आदान–प्रदान से महिला सशक्तीकरण की अवधारणा स्पष्ट होती है। भारतीय ज्ञान परम्परा में तर्क, विवेक एवं बौद्धिक स्वतंत्रता को महत्त्वपूर्ण माना गया है। यह अध्ययन इस संवाद के माध्यम से यह सिद्ध करने का प्रयास करता है कि प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं को ज्ञान, तर्क और दर्शन के क्षेत्र में समान अधिकार प्राप्त थे। यह अध्ययन भारतीय ज्ञान परम्परा में महिलाओं के योगदान और उनके सशक्तीकरण को नवीन दृष्टि से प्रस्तुत करता है।

प्रस्तावना

वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अर्थववेद) भारतीय ज्ञान प्रवाह के स्रोत हैं। हिन्दू धर्म के मान्यतानुसार अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद, सूर्य से सामवेद और अंगिरा से अर्थववेद का प्रादुर्भाव हुआ है। (स्नातक, 1964, पृ. 23) यजुर्वेद के दो भाग शुक्ल यजुर्वेद एवं कृष्ण यजुर्वेद हैं। शुक्ल यजुर्वेद से संबंधित शतपथ ब्राह्मण एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है, जो यज्ञों के विधि–विधान दार्शनिक सिद्धान्तों और वैदिक परम्पराओं का विस्तृत विवरण प्रदान करता है। शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम छः अध्यायों को वृहदारण्यकोपनिषद कहते हैं। इसमें आरण्यक और उपनिषद् दोनों ही मिश्रित हैं, इसीलिए इसका नाम वृहदारण्यकोपनिषद् पड़ा। (सिंह, 2020, पृ. 103) इसका कालक्रम अनिश्चित और विवादित है। (फिलिप्स, 2009, अध्याय–1) 'वृहदारण्यकोपनिषद् की रचना संभवतः पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व के पहले भाग में, 7वीं–6वीं शताब्दी ईसा पूर्व में हुई थी, एक या दो शताब्दी का अंतर हो सकता है। (ओलिवेल, 1998, पृ. 36) आदिशंकराचार्य जी ने इसकी सर्वोत्तम व्याख्या की और उनकी व्याख्या को ही सर्वोत्कृष्ट स्थान प्राप्त है। (गीता, 2021, पृ.2) यह उपनिषद् छः अध्यायों में विभक्त है और इसके तीसरे अध्याय के कुल 11 ब्राह्मणों में ऋषि याज्ञवल्क्य के साथ सात विद्वानों व विदुषी गार्गी के मध्य संवाद का उल्लेख है।

गार्गी : लगभग 800–600 ई. पूर्व ऋषि गर्ग के वंश में जन्मी गार्गी वाचक्नवी ऋषि वचक्नु की पुत्री थीं। वृहदारण्यकोपनिषद् के छठें, आठवें ब्राह्मण, छांदोग्य उपनिषद् व

ऋग्वेद की ऋचाओं में ब्रह्मवादिनी गार्गी का उल्लेख है। (मोदी, 1999, पृ. 125)

याज्ञवल्क्य :ऐईसा पूर्व 7वीं शताब्दी में भारत के वैदिक कालीन ऋषि थे। (राय चौधरी, 1972, पृ. 41–52) वृहदारण्यकोपनिषद् के अलावा अन्य ग्रन्थों (मत्स्य पुराण, 200.6, वायुपुराण, 60.12.15, विष्णुपुराण 3.5.2) में इनका उल्लेख है।

गार्गी–याज्ञवल्क्य संवाद : गार्गी वाचक्नवी ने प्रश्न कियाहे याज्ञवल्क्य!यह जो सब–कुछ जलों में मिला हुआ है, तो बताओ कि ये जल किसमें मिले हैं? याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया, हे गार्गी! वायु में। वायु किसमें मिला है? आकाश में हे गार्गी! द्यौ लोक में, द्यौ लोक किसमें मिला है? हे गार्गी! आदित्य लोकों में। आदित्य लोक किसमें मिला है? हे गार्गी! चन्द्र लोकों में। चन्द्रलोक किसमें मिला है? नक्षत्र लोक में। नक्षत्र लोक किसमें मिला है? हे गार्गी! देवलोक में,देवलोक किसमें मिला है? गंधर्वलोकों में, हे गार्गी! गंधर्वलोक किसमें मिला है? प्रजापति लोकों में, हे गार्गी! प्रजापति लोक किसमें मिला है? ब्रह्मलोकों में हे गार्गी! ब्रह्मलोक किसमें मिला है? याज्ञवल्क्य ने कहा हे गार्गी! इसके आगे न पूछ कि कहीं तेरा सिर न गिर जाय। तू उस देवता के विषय में पूछती है जो पूछने के योग्य नहीं। हे गार्गी! आगे मत पूछो। तब गार्गी चुप हो गई। (शतपथ ब्राह्मण 14.6.6.1)

प्रासंगिकता : यह अध्ययन गार्गी के संवादों को न केवल ऐतिहासिकपरिप्रेक्ष्य में देखता है बल्कि इसे आधुनिक समाज में महिला सशक्तीकरण और बौद्धिक स्वतंत्रता के संदर्भ के संदर्भ के साथ भी जोड़ता है।

उद्देश्य : शोध अध्ययन का उद्देश्य निम्नवत् है–

- गार्गी–याज्ञवल्क्य संवाद का दार्शनिक और सामाजिक विश्लेषण।
- भारतीय ज्ञान परम्परा में महिलाओं की बौद्धिक भागीदारी का अध्ययन।
- महिला सशक्तीकरण के ऐतिहासिक और वैचारिक आयाम को समझना।
- गार्गी के संवादों को आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिक बनाना।

साहित्य समीक्षा : त्यागी एवं थपलियाल (2023, अक्टूबर) ने 'इण्डियन फेमिनिज्म फ्राम ए वैदिक लेंस : ए केस स्टडी ऑफ गार्गी–याज्ञवल्क्य वर्बल ड्यूल' में बताया है कि वैदिक काल में महिलाओं ने अपनी तर्कशक्ति से पुरूषों को भी पीछे छोड़ दिया। गीता (2021) 'वृहदारण्यकोपनिषद् भारतीय दर्शन का मेरूदण्ड' में गार्गी–याज्ञवल्क्य संवाद का विवरण देती है। भास्वती (2019) ने 'द सागा ऑफ वूमंस स्टेटस इन द एनिसिऐंट इण्डियन सिविलाइजेशन' में माना है कि वैदिक युग स्वर्ण युग था। महिलाएं अपने समस्त अधिकारों का उपभोग करती थीं। रॉय (2017) ने 'एजुकेशनल स्टेटस ऑफ वूमंस इन द वैदिक पीरियड एन इंट्रोडक्शन' में बताया है कि वैदिक युग में महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। ब्लैक (2008) ने 'द

कैरेक्टर ऑफ द सेल्फ इन एनिसेंट इण्डिया' में साहित्यिक दृष्टिकोण से उपनिषद् को पढ़ने की बात करते हैं। विद्वानों ने इस संवाद को दार्शनिक, लैंगिक, ऐतिहासिक व साहित्यिक दृष्टिकोण से विश्लेषित किया है। यह अध्ययन इसे आधुनिक महिला सशक्तीकरण, लैंगिक समानता, भारतीय ज्ञान परम्परा एवं गार्गी के विचारों को वैश्विक संदर्भ को रेखांकित करेगा। इससे नारीवादी दृष्टिकोण का एक व्यापक एवं नवीन परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत होगा।

परिकल्पना :शोध अध्ययन की परिकल्पना निम्नवत् है–
''गार्गी–याज्ञवल्क्य संवाद वैदिक कालीन स्त्रियों की बौद्धिक स्वतंत्रता एवं दार्शनिक समृद्धि का प्रमाण है, जो भारतीय ज्ञान परम्परा में स्त्री सशक्तीकरण को नींव को उजागर करता है।''

शोध पद्धतिः यह शोध अध्ययन साहित्यिक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक, ऐतिहासिक एवं नारीवाद दृष्टिकोण पर आधारित है। इसमें प्राथमिक एवंद्वितीयक स्रोत प्रयोग में लाए गये हैं। शोध पद्धति का विवरण निम्न है–

- यह अध्ययन गार्गी–याज्ञवल्क्य संवाद का साहित्यिक विश्लेषण करेगा, जिसमें भारतीय ज्ञान परम्परा में उनके योगदान का अध्ययन कियाजायगा।
- इस अध्ययन में वृहदारण्यकोपनिषद् जैसे प्रमुख ग्रन्थों का पाठ्य विश्लेषणकियाजायगा।
- तुलनात्मक पद्धति का उपयोग करके गार्गी के विचारों की तुलना हिप्पार्शिया, मेरी बुल्सस्टोनक्रॉफ्ट जैसी महिला विचारकों से की जायगी।
- गार्गी के संवादों का अध्ययन ऐतिहासिकपद्धति के तहत वैदिक काल की ज्ञान परम्परा के संदर्भ में कियाजायगा जिससे उनके बौद्धिक योगदान को समझा जा सके।
- गार्गी के संवाद को नारीवादी दृष्टिकोण व महिला सशक्तीकरण के परिप्रेक्ष्य में समझा जायगा।
- शोध अध्ययन में प्राथमिक स्रोत के रूप में वृहदारण्यकोपनिषद् एवं अन्य प्राचीन ग्रन्थ होगें।
- शोध अध्ययन में द्वितीयक स्रोत के रूप में प्राचीन ग्रन्थों परविद्वानों की टीकाएं व शोध पत्र हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा और गार्गी याज्ञवल्क्य संवाद दार्शनिक परिप्रेक्ष्यः
भारतीय ज्ञान परम्परा में तार्किकता, जिज्ञासा और अनुभव को सत्य की खोज का मूल आधार माना गया है। गार्गी–याज्ञवल्क्य संवाद इस परम्परा का उत्कृष्ट उदाहरण है। गार्गी के प्रश्न कि सृष्टि किसके सहारे बंधी है? यह दिखते हैं कि भारतीय दर्शन तर्क, संवाद और अनुभव के समन्वय पर आधारित है। याज्ञवल्क्य का

उत्तर जिसमें ब्रह्म को ''अव्यक्त'', ''अक्षर'' और ''सर्वव्यापी'' बताया गया अद्वैत वेदान्त की उस परम्परा को पुष्ट करता है, जिसमें ब्रह्म को सृष्टि और आत्मा का मूल माना गया है। दार्शनिक दृष्टिकोण के मुख्य तत्त्व हैं–

- **तार्किकता और जिज्ञासा** : भारतीय दर्शन में जिज्ञासा और तर्क सत्य की खोज का आधार है। गार्गी का याज्ञवल्क्य से प्रश्न करना यह सिद्ध करता है कि प्रश्न पूछने की परम्परा ज्ञान प्राप्ति का महत्त्वपूर्ण साधन है। पश्चिमी चिंतन में प्लेटो के द्वन्द्वात्मक पद्धति का (प्लेटो, रिपब्लिक, टप्) का यह उद्देश्य है। गार्गी का संवाद इस परम्परा को भारतीय संदर्भ में पहले से स्थापित करता है।
- **अनुभववाद बनाम तर्कवाद** : याज्ञवल्क्य ने संवाद में स्पष्ट किया कि ब्रह्म को तर्क और भाषा से नहीं, बल्कि अनुभव और साधना से ही समझा जा सकता है। (शांकरभाष्य तैत्रि उप. 2.4.1) पश्चिमी विचारक अनुभववादी जॉन लाक और डेविड ह्यूम ने भी अनुभव को ज्ञान का स्रोत माना, जबकि भारतीय दर्शन इसे भौतिकता से आगे बढ़ाकर आध्यात्मिक क्षेत्र तक विस्तृत करता है।
- **ब्रह्म और अद्वैत की अवधारणा** :भारतीय दर्शन में ब्रह्म को ''अवर्णनीय'' और ''सर्वव्यापी'' माना गया है। (वही, केनउप.1.4) अद्वैत वेदांत में यह आत्मा और ब्रह्म की एकता को स्थापित करता है। इसके विपरीत, पश्चिमी दर्शन में देकार्त ने द्वैतवाद का सिद्धान्त प्रस्तुत किया जिसमें आत्मा और शरीर को अलग–अलग माना गया है।

लैंगिक परिप्रेक्ष्य

- गार्गी–याज्ञवल्क्य संवाद से यह विदित होता है कि उस काल में महिलाओं को ज्ञानार्जन व विचार अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त थी। (अल्तेकर, 1938)
- महाराज जनक की सभा में गार्गी के गूढ़ प्रश्न, परम ब्रह्म विषयक ज्ञान, वाकपटुता से ज्ञात होता है कि ब्रह्मवादिनी शिक्षित हैं। संवाद में कहीं नहीं झलकता है कि गार्गी के प्रश्न किसी भी प्रकार से उसकी लैंगिकता के कारण कमतर हैं। (शर्मा, 2002)
- याज्ञवल्क्य ने गार्गी को संवाद के अंत में चुप होने के लिए कहा, यह ज्ञान–विज्ञान में महिलाओं की भागीदारी को सीमित करने की प्रवृत्ति की ओर संकेत है। (ओलिवेल, 1998) इस प्रसंग के संदर्भ में विद्वानों में गलतफहमियाँ है कि गार्गी को चुप रहने के लिए कहना याज्ञवल्क्य का पुरूष अहम है। गीता कहती हैं कि ऐसा आरोप लगाया गया कि याज्ञवल्क्य स्त्री विरोधी थे, घमण्डी थे, स्त्री हत्या की धमकी देने वाले थे, गर्वीला थे, दुरभिमानी थे आदि। यहां याज्ञवल्क्य ने सिर्फ एक विपत्ति आने की संभावना के बारे में चेतावनी दी है। (गीता, वही, पृ. 3) संवाद से यह पता चलता है कि दोनों ने एक दूसरे का सम्मान किया। यह भारतीय ज्ञान परम्परा की अनूठी विशेषता है।

तुलनात्मक अध्ययन :गार्गी की तुलना समकालीन महिला दार्शनिकों और वैश्विक

स्त्री आन्दोलनों से निम्न रूप में की जा सकती है।

- **गार्गी व हिप्पार्शिया** :दोनोंमहिला चिंतकों ने अपने काल की सामाजिक व दार्शनिक सीमाओं को चुनौती दी। गार्गी ने ब्रह्म व सृष्टि पर अपने विचार रखे तो हिप्पार्शिया ने सामाजिक मूल्य और नैतिकता पर जोर दिया। गार्गी के विचार वेदांत दर्शन से मेल खाते हैं और हिप्पार्शिया यूनानी दर्शन के अन्तर्गत सिनेसीज्म से प्रभावित थीं। (शर्मा, 2002)
- **गार्गी व मेरी बुलस्टोनक्राफ्ट** :गार्गी ने महिलाओं कीबौद्धिक क्षमता का लोहा मनवाया और बुलस्टोनक्राफ्ट ने महिलाओं को शिक्षा और अधिकार प्रदान करने की बात कही। गार्गी का कार्य आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित था, जबकि मेरी का लेखन सामाजिक और राजनीतिक अधिकारों पर। (बुलस्टोनक्राफ्ट, 1792)
- **गार्गी व वैश्विक महिला आन्दोलन** : नारीवाद की पहली लहर का मुख्य ध्येय महिलाओं को राजनतिक अधिकार दिलाना था वहीं गार्गी ने ज्ञान व दर्शन के क्षेत्र में योगदान दिया। समानता यह है कि दोनों ने महिलाओं की समानता और उसकी क्षमताओं को समाज के सम्मुख रखा। (हाकबेल, 2000) गार्गी के विचारों की तुलना नारीवाद की तीसरी लहर के साथ करें तो पता चलता है कि नारीवाद की तीसरी लहर ने विविधता और व्यक्तित्त्व पर जोर दिया, जो गार्गी के ब्रह्म की अद्वैत संबंधी दृष्टि से मेल खातीहै। (अल्तेकर, वही)

आधुनिक समय में गार्गी के विचारों का महत्त्व : गार्गी की तार्किकता व विषय की समझ यह दर्शाती है कि महिलाओं को दोयम दर्जे का मानना ठीक नहीं है। महिलाएं बौद्धिक और दार्शनिक चर्चा का अभिन्न हिस्सा हो सकती हैं। शिक्षा व ज्ञान महिलाओं को आत्मनिर्भर व मजबूरी प्रदान करते हैं। गार्गी का संवाद लैंगिक समानता और महिलाओं के प्रति सम्मान के महत्त्व को उजागर करता है जो आज के समाज में अत्यन्त प्रासंगिक है। गार्गी ने यह स्थापित किया कि महिलाएं केवल परिवार या समाज तक सीमित नहीं हैं। वे दार्शनिक, आध्यात्मिक और सामाजिक नेतृत्त्व की भूमिका निभा सकती हैं। (माधवाचार्य, 1982)

गार्गी–याज्ञवल्क्य संवाद के अध्ययन से भारतीय ज्ञान परम्परा में महिलाओं की भूमिका को गहराई से समझा जा सकता है। इस संदर्भ में वैदिक युग की अन्य विदुषी महिलाओं जैसे मैत्रेयी और लोपामुद्रा की विचारधारा का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। गार्गी द्वारा उठाए गए दार्शनिक प्रश्नों की तुलना समकालीन दार्शनिक विमर्श से की जा सकती है। उनके तर्कों की आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता और महिला सशक्तिकरण के सिद्धान्तों पर उनके प्रभाव का विश्लेषण भी एक महत्त्वपूर्ण शोध की दिशा हो सकती है। साथ ही, वैदिक परम्पराओं और समकालीन समाज के बीच संवाद स्थापित करने के लिए इस विमर्श को शिक्षा प्रणाली में शामिल करने की संभावनाओं पर कार्य किया जा सकता है।

इस शोध में गार्गी के संवाद और उनके विचारों की महत्ता को विस्तृत रूप

से प्रस्तुत किया गया है। यह शोध यह सिद्ध करता है कि गार्गी के विचार ने केवल धार्मिक या आध्यात्मिक दृष्टिकोण से बल्कि सामाजिक और लैंगिक समानता के संदर्भ में भी अत्यधिक प्रासंगिक हैं। गार्गी ने समाज में महिलाओं की दार्शनिक और बौद्धिक भूमिका को स्वीकार करते हुए, भारतीय महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए प्रेरणा स्रोत बनीं। उनके विचारों का प्रभाव आज भी महसूस किया जा सकता है, जब हम महिलाओं के अधिकारों, शिक्षा और उनके सामाजिक योगदान पर बात करते हैं। गार्गी का संवाद यह साबित करता है कि महिलाएं न केवल पारिवारिक भूमिका में बल्कि समाज में भी अग्रणी भूमिका निभा सकती हैं। यह शोध महिलाओं के दार्शनिक और बौद्धिक सशक्तीकरण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अल्टेकर, ए.एस. (1938) द पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, मोतीलाल बनारसीदास।
- ओलिवल, पैट्रिक (1998) अनफेथफुल ट्रांसमीटर्स, जर्नल ऑफ इंडियन फिलॉसफी, 26(2), 36।
- ओलिवल, पैट्रिक (1998) द अर्ली उपनिषद, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- गीता,(2021, जुलाई–सितंबर) वृद्धारण्यकोपनिषद् भारतीय दर्शन का मेरुदंड, भारतीय रिसर्च जर्नल, 3(3), 1–6
- दास गुप्ता, सुरेन्द्रनाथ (1932) ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉसफी, मोतीलाल बनारसीदास।
- बुलस्टोनक्राफ्ट, मेरी (1792), विंडिकेशन ऑफ द राइट्स ऑफ वूमेन, लंदन।
- फिलिप्स, स्टीफन (2009) योगाकर्म एंड रिवर्थ: ए ब्रीफ हिस्ट्री एंड फिलॉसफी, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।
- माधवाचार्य, स्वामी (अनु.) वृद्धारण्यकोपनिषद् अद्वैत आश्रम।
- मोदी, रेसा (सं.) (1999) ए क्वेस्ट फॉर रूट्स ए स्त्री शक्ति पब्लिकेशन।
- राय चौधरी, ए.सी. (1972) पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ एनसिएंट इंडिया, कलकत्ता यूनिवर्सिटी।
- सिंह, जगराम (2020) भारत दर्शन, प्रभात प्रकाशन।
- शर्मा, अरविन्द (2002) वूमेन इन इंडियन रिलिजन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- स्नातक, विजेन्द्र (1964) वैदिक साहित्य, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।
- हाक, वेल (2000) फेमिनिज्म इन फॉर एवरीबडी, साउथ एंड प्रेस।